त्यौहार

* भारत में प्रचलित संवत →

1. विक्रम संवत
- उज्जैन के राजा विक्रमादित्य ने 57 ई.पु. - राज्यारोहण के उपलक्ष में

2. शक संवत
- (राष्ट्रीय संवत)
- कुषाण शासक कनिष्क ने 78 ईस्वी - शकों को पराजित करने के उपलक्ष में

3. अन्तर्राष्ट्रीय संवत (ईस्वी संवत)
महात्मा ईसा के जन्म से

ई.पू./BC
57 ई.पू. (+)
0
78 ईस्वी (-)
2019 ईस्वी/AD

Note → ये तीनों संवत सूर्य राशि पर आधारित है।

* त्यौहारों का संबंध शक संवत से है। आधारित राष्ट्रीय पंचांग (22 मार्च 1957) से है।

* राष्ट्रीय पंचांग / हिन्दी कलेण्डर में 12 माह होते है →

1. चैत्र (प्रथम माह)
2. वैशाख
3. ज्येष्ठ
4. आषाढ
5. श्रावण
6. भाद्रपद (सर्वाधिक त्यौहार)
7. आश्विन [कुंवार माह]
8. कार्तिक
9. मार्गशीर्ष (अगहन माह)] त्यौहार नहीं
10. पौष
11. माघ
12. फाल्गुन [अंतिम माह]

* प्रत्येक माह में 30 तिथियाँ होती है। जिनका संबंध चन्द्रमा की 30 कलाओं से होता है। 30 कलाएं मिलकर 1 चन्द्रमास बनाती है।

* एक चन्द्रमास में 2 पक्ष होते है →

चन्द्रमास
↓
1. प्रथम पक्ष / कृष्ण पक्ष / बदी / अंधेर पक्ष / कजला पक्ष
2. द्वितीय पक्ष / शुक्ल पक्ष / सुदी / उजला पक्ष

धिंगा गणगौर →
विधवा, सुहागिन, बालिकाएं
15 दिन बाद / वैशाख कृ. 3.
- महिला सशक्तिकरण का प्रतीक

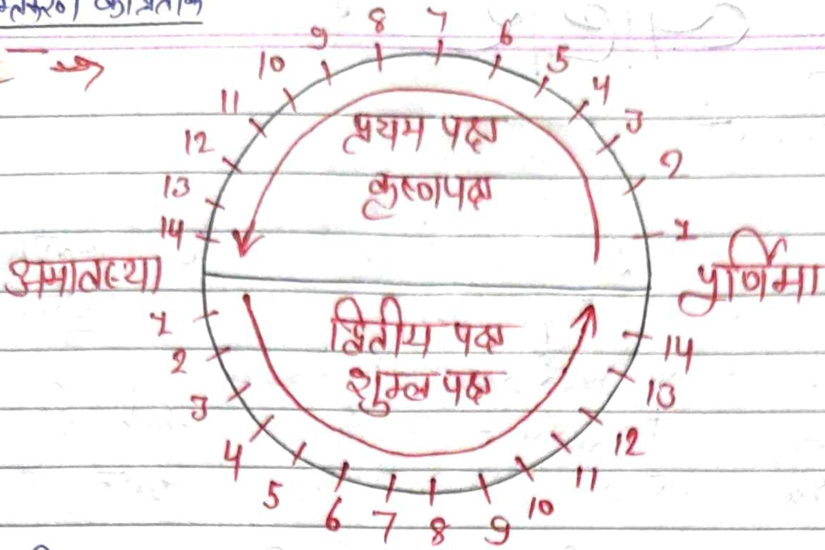

* किसी भी माह का प्रारम्भ कृष्ण 1 से व समापन शुक्ल पूर्णिमा को होता है।

Note → * नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र कृष्ण 1. से ना होकर चैत्र शुक्ल 1 से होता है।

* प्रत्येक 4 वर्ष में 1 अधिवर्ष होता है जिनमे 13 माह होते है। तथा चैत्र माह में 1 दिन बढ़ा दिया जाता है।

1. चैत्र माह →

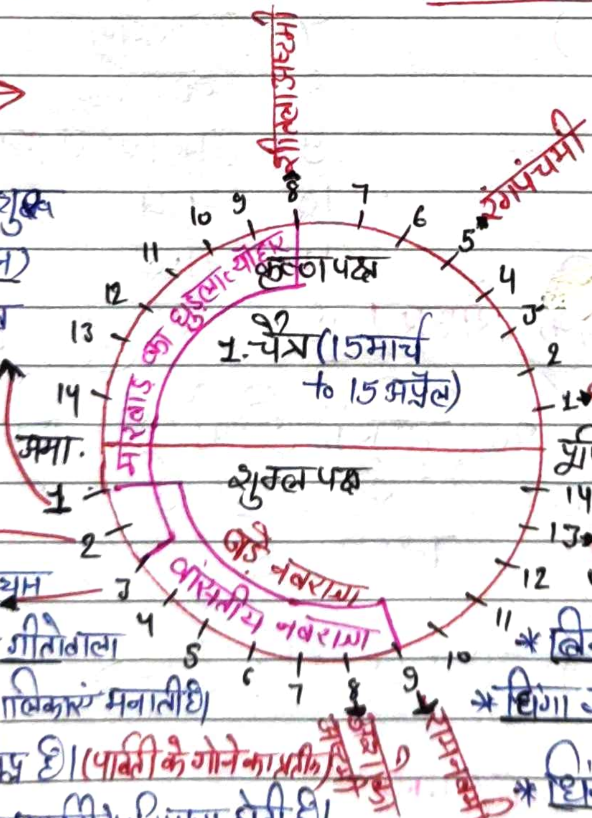

(फारसी)
* गुड़ीपड़वा → नववर्ष शुरू
(सिंधी समाज में भगवान)
- झूलेलाल का जन्मोत्सव
चेटीचंड का त्यौहार

* सिंजारा (रस्म)

* गणगौर → यह राजस्थान का सबसे लम्बा व सर्वाधिक गीतों वाला त्यौहार है। जिसे सुहागिन व बालिकाएं मनाती है।
जयपुर की गणगौर बहुत प्रसिद्ध है। (पार्वती के गौने का प्रतीक)

कर्नल टाड के अनुसार - उदयपुर की गणगौर प्रसिद्ध है।

1 → धुलंडी (गणगौर का प्रारम्भ)
पूर्णिमा → हनुमान जयंती (जन्मोत्सव) (चांदनपुर के महावीर जी)
13 → महावीर जयंती (करौली में जिनेन्द्र जैन धर्म का सबसे बड़ा मेला रथयात्रा) (गंभीर नदी के किनारे)

* बिना ईसर की गणगौर - जैसलमेर
* धिंगा गवर → मेवाड़ (उदयपुर) → विधवा + बालिकाएं
* धिंगा गणगौर / बेंतमार गणगौर → राजसिंह द्वारा
मारवाड़ / जोधपुर → विधवा, सुहागिन, बालिकाएं

* इस दिन गण (शिव) + गौर (पार्वती) की पूजा होती है।
* शिव को 'ईसर' व पार्वती को 'ईसरी' के रूप में पूजा जाता है।
* राजस्थान में गणगौर मनाने के अनेक तरीके प्रचलित है →
* लकड़ी की गणगौर → बीकानेर
* गुलाबी गणगौर → नाथद्वारा (राजसमंद)
* गणगौर के दिन "उदयपुर मेवाड़ समारोह" का आयोजन होता है। [चैत्र शुक्ल 2-5 तक]
* गणगौर से एक दिन पहले सिंजारा भेजा जाता है। जो एक परम्परा है।
* बूंदी में बडसिंह हाडा के समय से गणगौर नहीं मनाते।

* बाल विवाह निरोधक अधिनियम - 1 April 1929 (शारदा एक्ट) वैसाख पूर्णिमा → इसी दिन बुद्ध का जन्म - जन्म - कमल/सांड, गृहत्याग - महाभिनिष्क्रमण - घोड़ा, ज्ञानप्राप्ती - सम्बोधी - पीपल, मृत्यु - महापरिनिर्वाण - स्तुप (प्रतीक)

2. वैसाख माह →

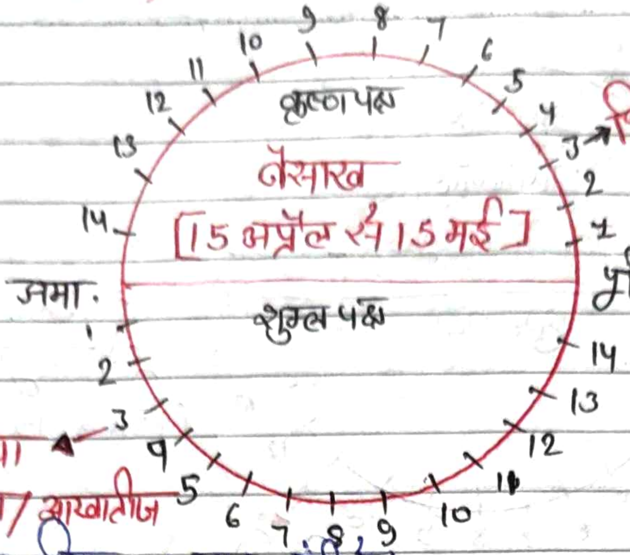

3 → धींगा गणगौर / बैंतमार गणगौर (मारवाड़ - जोधपुर) (विधवा + सुहागिन + बालिकाएं) * महिला सशक्तिकरण का प्रतीक

पूर्णिमा → बुद्ध पूर्णिमा / पीपल पूर्णिमा

3 → * अक्षय तृतीया / अबुझ सावा / आखातीज

* सर्वाधिक बाल विवाह (मुख्यत: बूंदी में)
* कृषि पर्व व परशुराम (ब्राह्मण) जयंती मनाते है।
→ किसान खेतों में प्रथम बार हल चलाता है व 7 प्रकार के अन्न की पुजा करके हल + हाली को गोगारखड़ी बांधता है।
* शकुन शास्त्री मौसमी घटनाओं की भविष्यवाणी करते है।
* सतयुग व त्रेता युग का प्रारम्भ इसी दिन हुआ।

3. ज्येष्ठ माह →

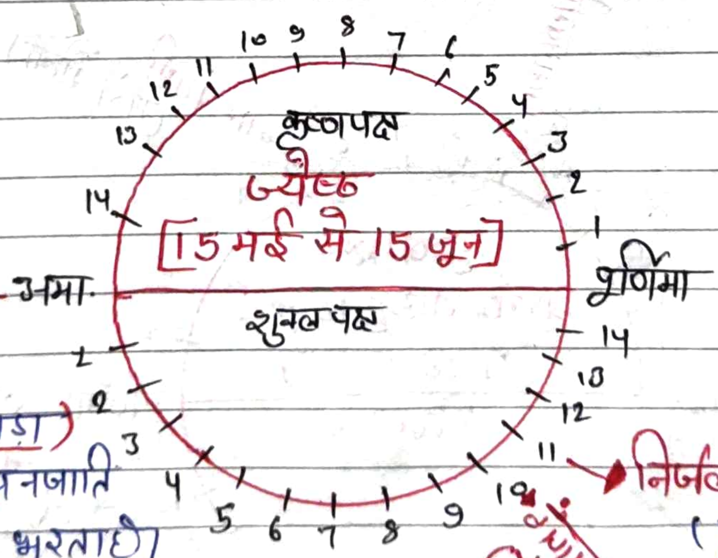

अमा. → * बड़ मावस / वट सावित्री व्रत
- सीताबाड़ी (केलवाड़ा) बारां में सहरिया जनजाति का कुंभ / मेला भरता है।

11 → निर्जला एकादशी (पुत्र की दीर्घायु के लिए निर्जल व्रत करती है)

10 → गंगा दशमी (गंगा दशहरा)

रामदेवजी का जन्म - द्वारिकाधीश के आशीर्वाद से गोगाजी का भोज - खीर, चूरमा, लापसी
रूणीचा (रामदेवरा मेला) जैसलमेर
प्रसाद - प्याज + चावल (बंदगी)

4. आषाढ माह →

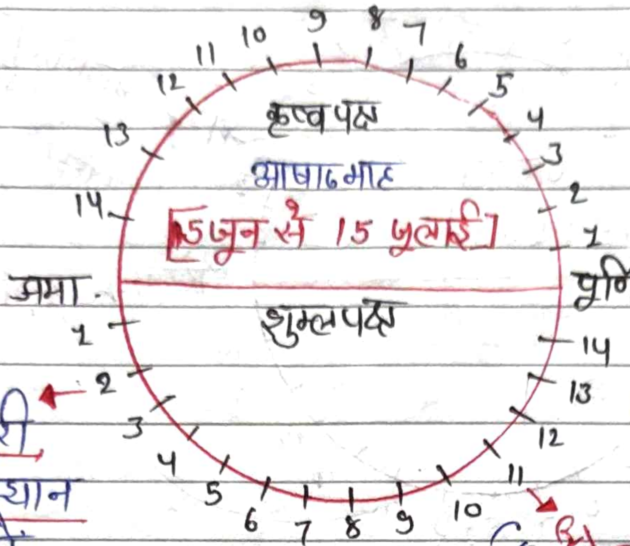

पूर्णिमा → गुरु पूर्णिमा
व्यास पूर्णिमा / कोकिला पूर्णिमा
(शिव शयन उत्सव मनाते है)

2 → * रथयात्रा
* मूलत: जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) में, राजस्थान में (अलवर) में

9 → भड़ल्या नवमी

11 → आषाढी बोहनी / देवशयनी एकादशी
(4 माह तक मांगलिक कार्य बंद)

5. श्रावण माह →

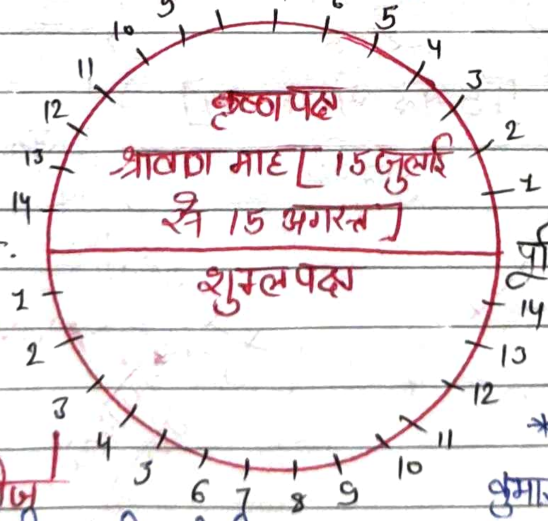

9 → गोगानवमी / गुगानवमी

5 → नागपंचमी (मंडोर मेला)

अमा → हरियाली अमावस्या
- उदयपुर में हरियाली अमावस्या का मेला लगता है।
* मांगलियावास - अजमेर में कल्पवृक्ष मेला लगता है

3 → श्रावणी तीज
उजली तीज / छोटी तीज / हरियाली तीज
* जयपुर की प्रसिद्ध है।
* मुख्यत: बालिकाओं का त्यौहार है।
* त्यौहारों का प्रारम्भ

पूर्णिमा → रक्षाबंधन / सत्यपूर्णिमा
नारियल पूर्णिमा →
* संस्कृत दिवस मनाते है।
* दरवाजे के दोनों ओर श्रावण कुमार के चित्र बनाते है।

देवनारायण के मूल निवास स्थान - देवमाली   अजरक प्रिंट - बाड़मेर की

पिता - सवाई भोज (अजमेर)   जन्म - मालासेरी डूंगरी आसींद (भीलवाड़ा)

देवमाली (भगड़ावतो का गांव)   पालन-पोषण - देवमाली

माघ सप्तमी → देवनारायण पुण्यतिथि - देहत्याग किया था।   आयुर्वेद की शिक्षा - उज्जैन में

चैत्र →

* शीतला अष्टमी → इस दिन शील डूंगरी (चाकसू - जयपुर) व कागा (जोधपुर) में शीतला माता के मेले लगते है तथा बाड़मेर में "थार महोत्सव" का आयोजन होता है।

* शीतला अष्टमी के दिन शीतला माता को बास्योड़ा (ठंडा - बासी) (सप्तमी की रात्रि का भोजन) का भोग लगाया जाता है।

* शीतला अष्टमी से मारवाड़ का घुड़ला त्योहार प्रारम्भ होता है जो गणगौर तक चलता है।

* चैत्र पूर्णिमा → राज्य मे स्थित सालासर बालाजी (चुरू) व मेंहदीपुर बालाजी (दौसा) मे मेला लगता है।

सालासर बालाजी - विराजमान प्रतिमा

6. भाद्रपद माह →

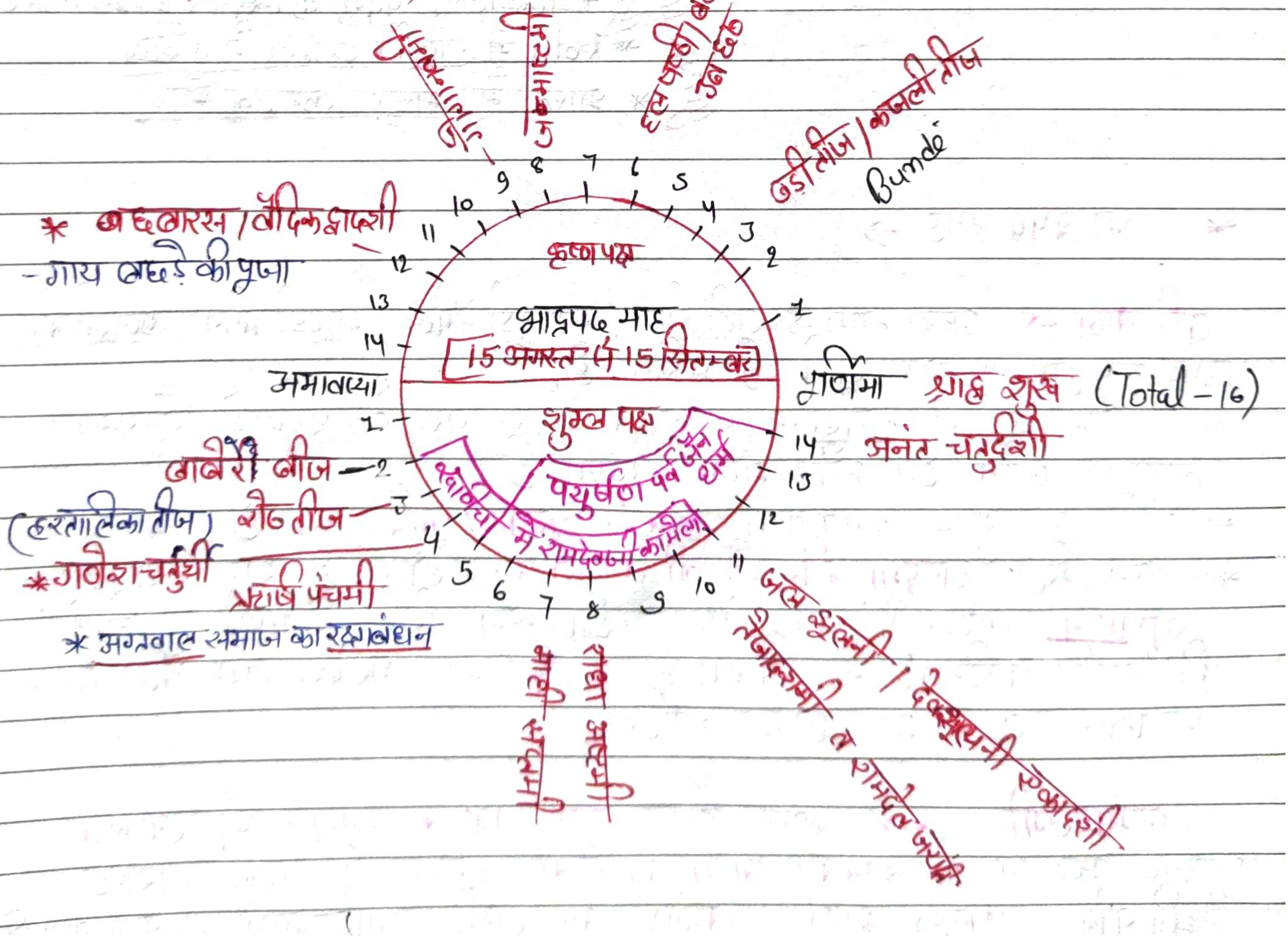

धींगा तीज - बालिकाएं, बूढ़ी तीज -
बड़ी तीज - सुहागिनें

7. आश्विन माह →

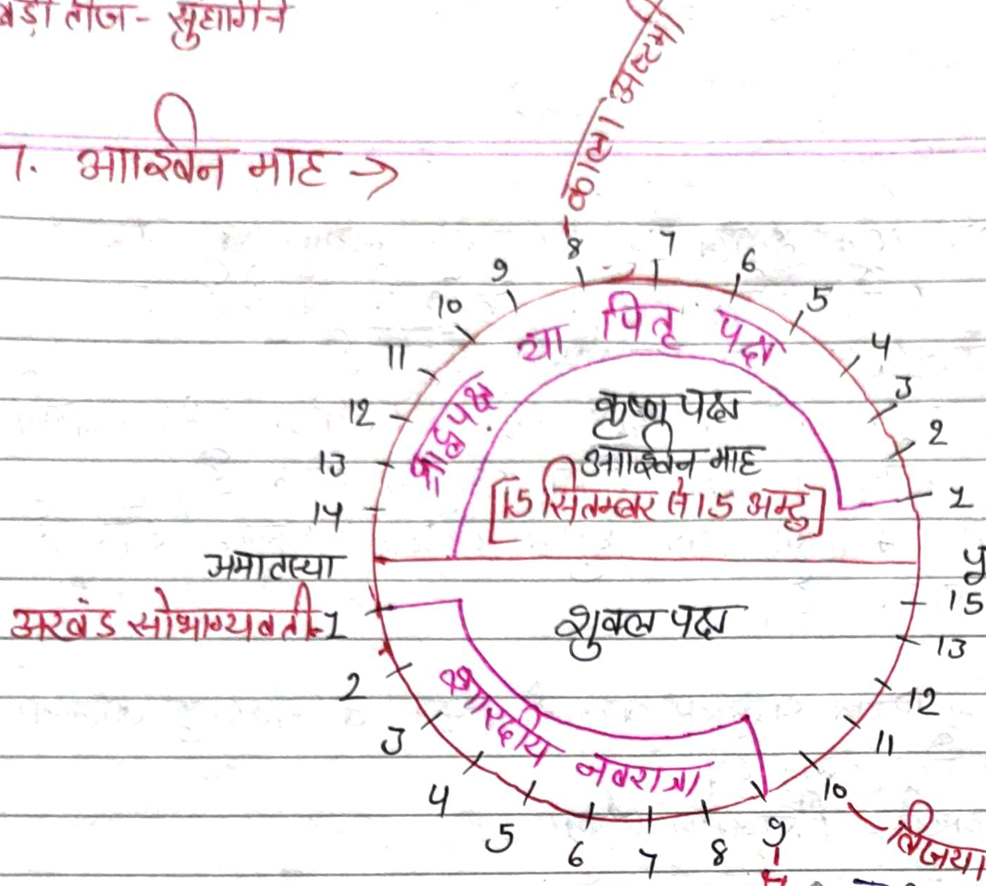

पूर्णिमा शरद पूर्णिमा / कोजागिरि पूर्णिमा (रास पूर्णिमा) → चन्द्रमा 16 कलाओं से परिपूर्ण होकर अमृत की वर्षा करता है।
* चित्तौड़ में मीरामहोत्सव मनाते है।

विजया दशमी (दशहरा)
(शमीवृक्ष) खेजड़ी + अस्त्र शस्त्र की पूजा
* नीलकंठ पक्षी के दर्शन शुभ माने जाते है।
* Kota मे राष्ट्रीय दशहरा मेला शुरू
* भारत मे मैसूर कर्नाटक मेला

* भाद्रपद माह →

बड़ी तीज → अन्य नाम → बूढ़ी तीज, सातुड़ी तीज, भादुड़ी तीज, कजली तीज
भाद्रपद कृष्ण तृतीया * यह बूंदी की प्रसिद्ध है।
* इस दिन बूंदी मे नवल सागर झील के तट पर देव प्रतिमाओं को स्नान करवाया जाता है। और मेला लगता है।
* मेले का मुख्य आकर्षण चकरी नृत्य / कुंदि नृत्य है।
* इस दिन चन्द्रमा और रोहिणी का मिलन होता है, यह मुख्यतः सुहागिन महिलाओं का त्यौहार है। इस दिन विरहिणी पत्नियों की रातें कठिनाई से बितती है। इसलिए परदेश गये पति को अवश्य घर आ जाना चाहिए।

जन्माष्टमी → इस दिन नरहड़ चिड़ावा झुंझुनू में हजरत
भाद्रपद कृष्ण अष्टमी शक्कर बाबा का मेला लगता है। जिन्हें नरहड़ की पीर, नरहड़ शरीर, बागड़ का धणी आदि नामो से जाना जाता है।

गोगानवमी → इस दिन विभिन्न स्थानों पर गोगाजी के मेले लगते है।
भाद्रपद कृष्ण नवमी 1. गोगामेड़ी (धुरमेड़ी) नोहर हनुमानगढ़ →
यहाँ इनका मुख्य मेला लगता है।
2. ददरेवा चुरू (शिर्ष मेड़ी) →
3. सांचोर जालौर (गोगाजी की ओल्डी)

* गोगानवमी के दिन गोगाजी को खीर + चुरमा + लापसी का भोग लगाया जाता है।
* दाल (चावल) व प्याज का प्रसाद वितरित किया जाता है।
* गोगाजी के मुख्य मंदिर का निर्माण फिरोज शाह तुगलक ने करवाया। मंदिर की प्रारंभिक बनावट मकबरे नुमा थी।
* 1911 में बीकानेर के गंगासिंह ने मंदिर को वर्तमान स्वरूप दिया। आज भी मंदिर के मुख्य द्वारपर "बिस्मिल्लाह" लिखा है। और मंदिर में दो पुजारी (हिन्दु व मुस्लिम) होते है।
* इनके मुस्लिम भक्त "चायल" कहलाते है।

बाबेरे बीज → भाद्रपद शुक्ल द्वितीया
* इस दिन उड़कासमेर शिव बाड़मेर में भगवान द्वारिकाधीश के आशीर्वाद से देवनारायण का जन्म हुआ।
* इस दिन रुणीचा (जैसलमेर) में रामसरोवर तालाब के किनारे रामदेवजी का मुख्य मेला लगता है। मेले में जाने वाले भक्तों को "जातरू" कहा जाता है।

* मेले का मुख्य आकर्षण "तेरहताली नृत्य" माना जाता है। जो चौतारा (वीणो/तंदुरा) व मंजीरा वाद्य की लय पर किया जाता है।
* मुख्य नृत्यांगना → मांगी बाई [पादरला (पाली)]
* मांगी बाई के गुरु गोरमदास थे।
* मांगी बाई ने इस नृत्य को सार्वजनिक रूप से 1954 में पंडित जवाहर लाल नेहरू के सामने गाड़िया लुहार सम्मेलन (चित्तौड़) में किया।

अन्य मेले → मेसूरिया पहाड़ी (जोधपुर)
बिराटीया खुर्द (पाली मे)
सुरता खेड़ा (चित्तौड़ मे)
छोटा रामदेवरा (गुजरात में)

8 कार्तिक माह →

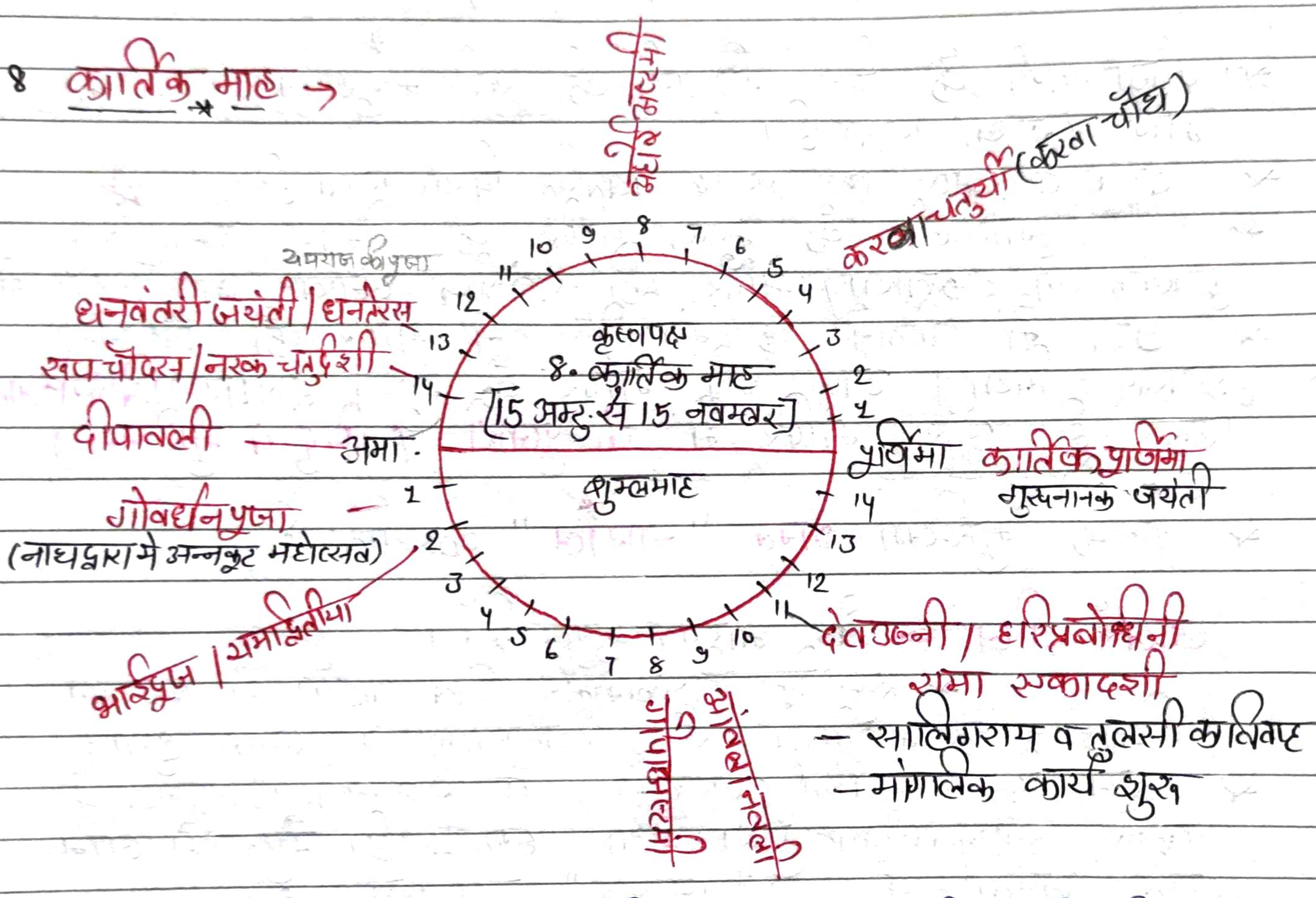

* भाद्रपद → * गणेश चतुर्थी → इस दिन रणथंभौर सवाई माधोपुर मे त्रिनेत्र
(भाद्र शुक्ल चतुर्थी) गणेश जी का मेला लगता है।

* माघी सप्तमी → इस दिन देवनारायण जी पुण्यतिथि मनाई जाती है।
(भाद्र शुक्ल सप्तमी) इसी दिन विभिन्न स्थानों पर देवनारायण मेले लगते है।

* आसींद (भीलवाड़ा) मे सवाई भोज मेला (मुख्य मेला)।
* देवधाम जोधपुरिया (टोंक) (दूसरा मुख्य मेला)
* देवडूंगरी (चित्तौड़)
* देवमाली (अजमेर) → बगड़ावतो का गांव / देवनारायण जी का मूल निवास
* दाता साहब (टोंक)

कमल के फूल (विष्णु के अवतार) से जन्म

Note → देवनारायण जी का जन्म - मालासेरी डूंगरी भोसिंद (भीलवाड़ा) में

पालन-पोषण - देवास (M.P) (ननिहाल)

आयुर्वेद की शिक्षा - उज्जैन में

पिता - सवाई भोज (मसूदा)

देवनारायण की पत्नी - पीपल दे (जयसिंह की पुत्री) नागकन्या

* देवनारायण के वर्ष में दो मेले लगते है →

1. भाद्रशुक्ल सप्तमी / देवनारायण पुण्य तिथि

2. माघशुक्ल सप्तमी / देवनारायण जयन्ती → इस दिन लगने वाले मेले मुख्य मेले माने जाते है।

* राधाअष्टमी → इस दिन राजस्थान में दो मुख्य मेले लगते है →
(भाद्र शुक्ल अष्टमी) 1. सलेमाबाद अजमेर मे (निम्बार्क सम्प्रदाय का मेला जिसे सनक सम्प्रदाय / सनकादिक सम्प्रदाय / हंस सम्प्रदाय आदि नामों से जाना जाता है।

* निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रणेता → निम्बकाचार्य को माना जाता है लेकिन सलेमाबाद शाखा की स्थापना आचार्य परशुराम की।

2. सरिस्का अलवर → भर्तृहरि का मेला → कनफटे नाथों का मुख्य केन्द्र
भर्तृहरि उज्जैन के राजा थे। उज्जैन में इनकी गुफा स्थित है।

* तेजादशमी व रामदेव जयन्ती → इस दिन अनेक मेले लगते है।
(भाद्र शुक्ल दशमी) 1. खेजड़ली गाँव जोधपुर में खेजड़ली वृक्ष मेला
→ यह विश्व का एकमात्र "वृक्ष मेला" लगता है। जिसकी शुरुआत 21 सितम्बर (खेजड़ली दिवस / वृक्ष दिवस) 1978 (पहली बार) को मानी जाती है।

* खेजड़ली दिवस / वृक्ष दिवस की शुरुआत वर्ष 1978 से हुई।
31 अक्टुबर 1983 को खेजड़ी को "राज्यवृक्ष" का दर्जा दिया गया। वर्ष 1991 में "ऑपरेशन खेजड़ा" कार्यक्रम शुरू किया गया।

Note → खेजड़ी के नीचे गोगाजी व बाबा झुंझार जी थान होता है।

* खेजड़ी वृक्ष शीतला माता का प्रतीक है।

* खेजड़ी की पूजा दशहरे के दिन होती है।

2. चित्तौड़ दुर्ग में जौहर मेला → यह मेला ~~1567-68~~ 1303 में ~~अकबर~~ अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के दौरान ~~उदयसिंह~~ रत्नसिंह के समय 1600 रानियों के जौहर किये जाने की स्मृति में भरता है।

3. परबतसर नागौर में तेजाजी (पत्नी-पेमल) का मेला → इसी दिन तेजाजी के (मुख्य मेला) अन्य मेले भी लगते है

जैसे → * सुरसुरा (किशनगढ़ - अजमेर) - तेजाजी का मृत्यु स्थल
* सेंधारिया (अजमेर) → तेजाजी को सर्पदंश मारा
* ब्यावर (अजमेर) → तेजाजी का सबसे प्राचीन थान (चबूतरा)
* भावता (अजमेर) →
* बांसी डुंगरी (बूंदी) → तेजाजी की कर्मस्थली
* खड़नाल (नागौर) → तेजाजी की जन्मस्थली)

Note → वीर तेजाजी पशु मेला परबतसर (नागौर) का आयोजन श्रावण की पूर्णिमा से * भाद्रपद अमावस्या तक होता है।
* यह राजस्थान में लगने वाला आय की दृष्टि से सबसे बड़ा पशु मेला है।

* डोलग्यारस / जलझूलनी एकादशी → इसे देवझूलनी एकादशी (भाद्रशुक्ल एकादशी) कहा जाता है, इस दिन विष्णु का परिवर्तन उत्सव मनाया जाता है तथा अनेक मेले लगते है →
1. बारां में कल्याणराय जी का मेला / डोलमेला (मुख्य मेला)
2. मालपुरा टोंक में डिग्गी कल्याण जी का मेला
3. मण्डफिया चित्तौड़ में सांवलियां सेठ जी का मेला

* श्राद्ध → यह 16 दिन तक चलता है। जिसमें कुंवारी (भाद्र पूर्णिमा से प्रारम्भ) कन्याएं गोबर से साँझी बनाती है जो पार्वती * का प्रतीक है। 16 दिन तक पित्रों के नाम का पिंडदान

किया जाता है। * प्रसिद्ध साखाएं → मत्स्येन्द्र नाथ | मछींदरनाथ
* मछींदर नाथ को तिब्बत में "लुईपाद" के नाम से जाना जाता है। जिसका राजस्थान में एकमात्र मंदिर उदयपुर में है जिसे "सोझा मंदिर" कहते है।
* केले की प्रसिद्ध साझोरा श्रीनाथ जी मंदिर नाथद्वारा (राजसमंद) ★

11. माघ माह →

तिल चौथ | संकटचौथ (स.माधोपुर की प्रसिद्ध)

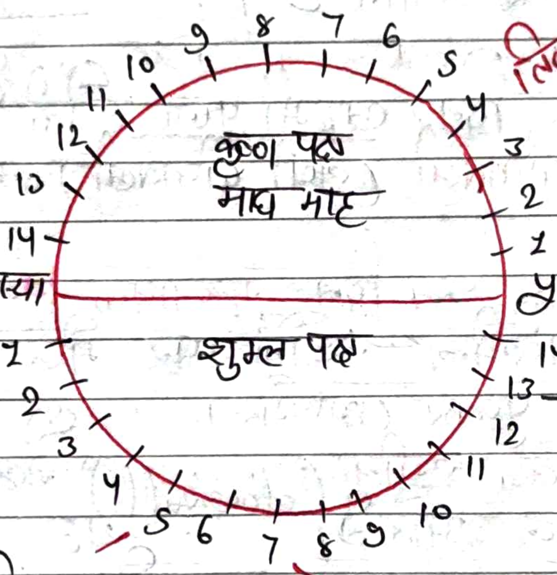

मौनीमावस अमावस्या (महर्षि मनु का जन्म)

पूर्णिमा होली रोपणी

13 — विश्वकर्मा जयन्ती

बसंत पंचमी
सरस्वती जयंती
– कामदेव व रति की पूजा
– मा.शि.बोर्ड द्वारा गार्गी पुरस्कार वितरण

रथसप्तमी

12. फाल्गुन माह →

महाशिवरात्री
– शिवाड़ सवाईमाधोपुर मे मेला
– 12वाँ ज्योतिर्लिङ्ग है अमा.
– जिसे घुश्मेश्वर कहते है।

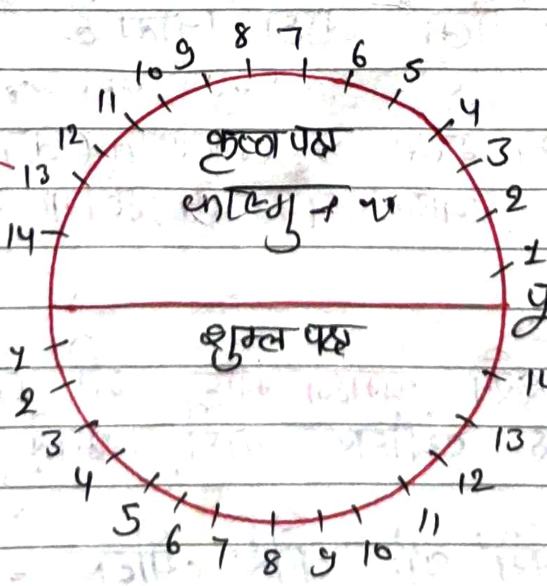

पूर्णिमा होली

महर्षि कणाद की तपोभूमि - कंसुआ (कोटा) महर्षि वशिष्ठ - आबू (सिरोही),
महर्षि वाल्मीकि - बारां सीताबाड़ी भारद्वाज - जयपुर
मत्स्येन्द्र नाथ की - गालव - कोलायत

8 कार्तिक माह →

1. करवा चौथ → इस दिन सुहागिन महिलाऐं अपने पति की दीर्घ (कार्तिक कृष्ण चतुर्थी) आयु के लिए मंगल व्रत करती है।

धन्वंतरी जयंती/धनतेरस → इस दिन धन के देवता कुबेर की पूजा होती है। (कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी) धनवंतरी जयंती का आयुर्वेद मे सर्वाधिक महत्व है।
* इस दिन मारवाड़ क्षेत्र की छोटी दीपावली (काणी दीपावली) मनाई जाती है लेकिन हाड़ौती प्रदेश मे देवउठनी एकादशी के दिन छोटी दीपावली मनाई जाती है।

दीपावली → इस दिन लक्ष्मी पूजा होती है। तथा मारवाड़ मे (कार्तिक अमावस्या) बड़ी दीपावली (राणी दीपावली) मनाई जाती है।

कार्तिक पूर्णिमा → इस दिन गुरुनानक जयंती मनाई जाती है तथा विभिन्न स्थानों पर मेले लगते है -

1. कार्तिक मेला - पुष्कर (अजमेर)
- यह राज्य का सबसे रंगीन (colourfull) मेला है। इसमे सबसे ज्यादा विदेशी पर्यटक आते है। यह आय की दृष्टि से भी राजस्थान का सबसे बड़ा मेला लगता है।

2. चन्द्रभागा पशुमेला → झालरापाटन (झालावाड़)
- यह हाड़ौती प्रदेश का* सबसे बड़ा पशु मेला है। जिसे हाड़ौती का सुरंगा मेला कहा जाता है

3. कपिल मुनि का मेला → कोलायत (बीकानेर)
* कपिल मुनि को सांख्यदर्शन के प्रणेता माना जाता है।

9 मार्गशीर्ष माह → कृष्ण अष्टमी - काल भैरव अष्टमी
इसे अगहन माह भी कहा जाता है।
* इस माह में कोई त्यौहार नही आते है।

10 पौष माह → इसमें भी कोई त्यौहार नही आते है।
... सप्तमी - बीकड़ी गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती

सूहवड़ - जापा का लाडू
ओलंदी - नवविवाहिता के साथ बहन आई
अवरिया - डायजवाल

नाता - चूड़ी पहनाना
विधवा का नाता - खात्रा
जातकर्म - नाभी छेदन
अचरियो - बचरियो → मिस्सर्बा
सूबा → जच्चे-बच्चे का घर । शुद्धीकरण होता है।

कोयला - जमणा (सोने-चाँदी में धातुओं से शब्द पतले)
जेगड़ - बासन
आगरणी → 8 वाँ महिना (चुनड़ी पीहर से)
अरखा →
बिनोय - दूल्हा-दुल्हन का भूतिया

(12) फाल्गुन माह →

होली → (फाल्गुन पूर्णिमा) होली के दिन जयपुर में हाथी समारोह का आयोजन होता है तथा ब्यावर (अजमेर) में बादशाह की सवारी निकाली जाती है। मयूर नृत्य किया जाता है। तथा बादशाह का मेला लगता है।

* इसी दिन डूंगरपुर (बांसवाड़ा) में जलती लकड़ियों, कंकड़ों, पत्थरों से राड़ (लड़ाई) खेली जाती है तथा बाड़मेर व जालौर में इलोजी (छेड़छाड़ के देवता) की बारात निकाली जाती है। जो बाद में रोने बिलखने लगते है।

* होली के प्रकार →

1. पत्थरमार होली - बाड़मेर, भीलुड़ा (बांसवाड़ा)
2. लठ्ठमार होली - महावीर जी (करौली)
3. कोड़ामार होली - भिनाई अजमेर
4. बादशाह की होली - ब्यावर अजमेर
5. देवरभाभी की होली - ब्यावर अजमेर (मोची जाति)
6. अंगारों की होली - केकड़ी अजमेर
7. भगोरिया होली - मेवाड़
8. कंडामार (छाणा) होली - गलियाकोट डूंगरपुर
9. डोल्चीमार होली - बीकानेर के पुष्करणा ब्राह्मण
10. फूलों की होली - ब्रज क्षेत्र भरतपुर
11. होली पर सींग वाले शेरों का स्वांग - मांडल (भीलवाड़ा) (त्रयोदशी)
12. होली का न्हाण → सांगोद व भांडा (कोटा) (त्रयोदशी)

* अन्य त्यौहार →

(A) इस्लाम धर्म के त्यौहार →

1. मोहर्रम → मोहर्रम हिजरी संवत का प्रथम माह है। यह त्यौहार मोहर्रम माह की 10 तारीख को

पैगम्बर मोहम्मद साहब के नाती हजरत इमाम हुसैन की स्मृति में मनाया जाता है। इस दिन ताजिये निकाले जाते है। तथा तलवारबाजी का प्रदर्शन होता है।
* ताजिये निकालते समय ताशा वाद्य बजाया जाता है।

2. चेहल्लुम → यह मोहर्रम के 40 दिन बाद 'सफर' माह की 20 तारीख को मनाया जाता है। इस दिन ताजिये निकालकर जमीन में दफनाये जाते है।

3. ईद उल मिलादुन्नबी / ईद मिलाद / बारावफात → इस दिन पैगम्बर साहब का जन्म हुआ था। और उनका प्रिय भोजन खीर-चावल बनाया जाता है।
* यह त्यौहार रबि उल अव्वल माह की 12 तारीक को मनाया जाता है।

4. शब-ए-बारात → यह शाबान माह की 14वीं तारीख को मनाया जाता है। इस दिन पैगम्बर साहब को मुक्ति मिली थी।
* इस दिन पूर्वजों को याद किया जाता है तथा मनुष्य के कर्मों की जाँच होती है। एव उसका भविष्य निर्धारित किया जाता है।
* इस दिन अल्लाह से पापों की ~~कुबूल~~ माफी मांगी जाती है।

5. शब-ए-कद्र → यह रमजान माह की 27 तारीख को मनाया जाता है। इस दिन "कुरान-शरीफ" को उतारा गया था।

6 ईद-उल-फीतर / मिठी ईद / सिवईयो की ईद → यह रमजान समाप्ति के बाद शव्वाल माह की 1 तारीख को मनाया जाता है। इस दिन सामूहिक नमाज अदा होता है। और खैरात (दान) बांटी जाती है।

(बकरा-ईद)
7. ईद-उल-जुहा (बलि) → जिलहीज माह की 10 तारीख को
– 'जुहा' का अर्थ 'बलि' है। इस दिन अरबों के धर्मगुरु इब्राहिम द्वारा अपने पुत्र इस्माइल की बलि दी गई थी। उसी की स्मृति मे यह त्यौहार मनाया जाता है।

* सिक्ख धर्म के त्यौहार →

1. लोहड़ी – 13 जनवरी
2. बैसाखी – 13 अप्रैल
3. गुरुनानक जयंती – कार्तिक पूर्णिमा
4. गुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती – पौष शुक्ल सप्तमी

* ईसाई धर्म के त्यौहार →

1. क्रिसमस-डे → 25 दिसंबर → इस दिन ईसा मसीह का जन्म हुआ था।

2. गुड-फ्राईडे → ईस्टर के ठीक पहले वाले शुक्रवार को (ईसा मसीह की मृत्यु)

3. ईस्टर → 2 मार्च – 22 अप्रैल के बीच पूर्णिमा के ठीक बाद वाले रविवार को मनाते है। (इस दिन पुर्नजन्म हुआ था)

* जैन धर्म के त्यौहार →

1. पर्युषण पर्व → यह जैन धर्म का सबसे बड़ा त्यौहार है जो भाद्रशुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक चलता है।

* श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार – यह त्यौहार भाद्रपद कृष्ण द्वादशी से शुक्ल पंचमी तक चलता है।
* इसमें आत्म शुद्धी, संयम एवं नियम का पालन किया जाता है तथा जैन मंदिरो में पूजा अर्चना होती है।

तीर बनाने वाली जाति - सरगड़ा
तीर चलाने वाली जाति - भील

* इस त्यौहार का अंतिम दिन "संवत्सरी" कहलाता है।

2. क्षमावाणी → आश्विन कृष्ण एकम
इस दिन जाने अनजाने में की गयी गलतियो की माफी मांगी जाती है।

3. सोलह कारण → भाद्रपद कृष्ण एकम

4. दशलाक्षण पर्व → यह चैत्र - भाद्र माह के महिनो में मनाया जाता है इसमे 10 धर्मों का पालन किया जाता है।
* इस त्यौहार का सर्वाधिक महत्व दिगम्बर जैन में है।

5. सुगंध दशमी / धूप दशमी → भाद्रपद शुक्ल दशमी

6. रत्न त्रय → भाद्र शुक्ल त्रयोदशी से पूर्णिमा तक

*इसमे जैन दर्शन के त्रिरत्नो का पालन किया जाता है :→
दृष्टि, सम्यक, चरित्र।

7. रोट तीज / हड़तालीका तीज → भाद्र शुक्ल तृतीया
→ इस दिन जैन धर्म के घरों में रोट बनाये जाते है।

8. महावीर स्वामी जयंती → चैत्र शुक्ल त्रयोदशी - जन्म हुआ था

9. ऋषभ जयंती → चैत्र शुक्ल नवमी

साम्प्रदायिक सद्भावना के मेले - 3
रामदेवजी - जैसलमेर
गोगाजी - हनुमानगढ़
ख्वाजा साहब - अजमेर

* मेले *

मेला	तिथि	विशेष व स्थान
1* करणीमाता	चैत्र व आश्विन के नवरात्रों में (2 बार)	देशनोक (बीकानेर) * इसका पुजारी दूल्हे के भेष में पूजा करता है
2* जीणमाता	चैत्र व आश्विन के नवरात्रों में * पुजारी दूल्हे के वेष में पूजा करता है।	रैवासा (सीकर), * इसे भंवरादेवी कजरादेवी भी कहा जाता है। * पं झाबरमल शर्मा ने इसके मंदिरों को "जयंती देवी" कहा।
3* फूलडोल मेला	चैत्र कृष्ण एकम से पंचमी तक	शाहपुरा, भीलवाड़ा * यह रामस्नेही सम्प्रदाय का मुख्य मेला है।
4* शीतला माता का मेला	चैत्र कृष्ण अष्टमी	शील डूंगरी - चाकसू (जयपुर) व कागा (जोधपुर) * राजपूत लोग इसे "जगतजननी" कहते है।
5* ऋषभ देव	चैत्र कृष्ण अष्टमी	धुलेव (उदयपुर) * इन्हे केसरिया नाथजी काला जी, धूलेवा धणी, आदि नामों से जाना जाता है। भील जनजाति के लोग इन पर चढ़ी केसर का पानी पीकर झूठ नहीं बोलते है।
6 घोटीया अम्बा	चैत्र अमावस्या	बाँसवाड़ा (चंदू जी का गढ़) (भीलो का मुख्य मेला)
*7 ~~छुबैय्या का अम्बा~~ कैलादेवी का	चैत्र शुक्ल एकम से नवमी तक	करौली (भरतपुर) * राज. का लक्खी मेला, लांगुरिया गीत गाते है जोगणिया नृत्य किया जाता है। * यह करौली के यादव वंश की कुलदेवी है। जिसे अंजनी माता / जोगमाया आदि नामों से जाना जाता है

खाटूश्याम - बरबरीक का रहस्य   महाभारत का युद्ध - करनाल (हरियाणा)   सगुण-निर्गुण - दोनों धारणा

सांभर   मुंडरा, खाटू, रिंगस   आस्तिक-नास्तिक - वैदिक (मूर्तिपूजा धारणा)

उदयपुरवाटी झुंझुनू - सकराय माता (खंडेलवालों की कुलदेवी)   पैर   शिश   धड़

* 8 महावीर जी का मेला	चैत्र शुक्ल त्रयोदशी	चंदनगाँव (सवाई माधोपुर), करौली। इनका मेला लक्खी मेला कहलाता है जो जैन धर्म से संबंधित है।
* 9 मेंहदीपुर बालाजी का मेला	चैत्र पूर्णिमा	दौसा
* 10 सालासर बालाजी का मेला	चैत्र पूर्णिमा	सुजानगढ़ (चुरू)
* 11 नारायणी माता का मेला	वैसाख शुक्ल एकादशी	बरवा डूंगरी, राजगढ़ (अलवर)
* 12 सीतामाता का मेला	ज्येष्ठ अमावस्या	चित्तौड़गढ़
* 13 कल्पवृक्ष मेला	श्रावण अमावस्या	मांगलियावास (अजमेर)
* 14 श्रावणी अमावस्या का मेला	श्रावण अमावस्या	उदयपुर
* 15 गुरुद्वारा बुड्ढा जोहड़ मेला	श्रावण अमावस्या	श्रीगंगानगर
* 16 तीजमाता का मेला	श्रावण शुक्ल तृतीया	जयपुर
* 17 कजली तीज का मेला	भाद्र कृष्ण तृतीया	बूंदी * इस दिन बूंदी में तीजमाता की सवारी निकाली जाती है।
* 18 खाटूश्याम जी का मेला	फाल्गुन शुक्ल एकादशी	खाटू (सीकर) (हारे का सहारा)
* 19 डाडा पम्पाराम मेला	फाल्गुन माह	विजयनगर (गंगानगर)
* 20 शाकम्भरी माता का मेला	चैत्र व आश्विन नवरात्रा	सांभर (जयपुर) * यह सांभर के चौहानों की कुलदेवी है इन्होंने अकाल के समय उदयपुरवाटी (झुंझुनू) में साक-सब्जियाँ उत्पन्न की व 'सकराय माता' कहलायी। * सकराय माता का मेला - उदयपुरवाटी (झुंझुनू) में लगता है जिसे खंडेलवाल जाति की कुलदेवी माना जाता है।
* 21 दधिमति का मेला	चैत्र व आश्विन नवरात्रा	गोठ मांगलोद (नागौर) * यह दाधीच ब्राह्मणों की कुलदेवी है।